International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
July –August - 2021, Volume-8, Issue-4 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

बाल साहित्य और बाल रंगमंच

गुड्डी बाई मीना
सहायक आचार्य
सौरभ कॉलेज ,मासलपुर करौली

सार

हिंदी का बाल साहित्य लोरी, पालना गीतों, प्रभाती, दोहा, गजल, पहेली, कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, नाटक आदि अनेक रूपों और विधाओं से संपन्न है, आज का बाल साहित्य तो कितने ही सार्थक प्रयोगों से समृद्ध है, लेकिन, इसके सही मूल्यांकन और उसके सही रेखांकन का अभी तक अभाव है। हिंदी के बाल साहित्य के प्रारंभ को लेकर थोड़ा विवाद है। इसे 14 वीं-15वीं शताब्दी के आसपास से उपस्थित माना गया है यानी अमीर खुसरो, सूरदास, जगनिक वगैरह को इसमें शामिल किया जाता है। राजस्थानी कवि जटमल की रचना 'गोरा बादल' को बाल साहित्य पहली रचना माना जाता है। अगर इस विवाद में न जाएं तो हिंदी के बाल साहित्य का वास्तविक प्रारंभ आधुनिक काल से यानी बीसवीं सदी के आसपास मानना होगा। बाल साहित्य की शुरुआत के कारणों में से एक शिक्षा के लिए पाठ्य पुस्तकों की तैयारी की जरूरत थी। ईसाई मिशनरी स्कूल स्थापित किए गए और उनके कारण नए प्रकार की शिक्षा प्रणाली ने नई शैली की कहानियां लिखने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता के बाद भारतीय बाल साहित्य में बच्चों के अनुकूल ऐसा साहित्य लिखा गया है जो पुराने साहित्य की तरह उपदेशात्मक नहीं है। बंगाली में जोगिंद्रनाथ सरकार द्वारा 1891 में लिखित कहानियों की पुस्तक 'हांसी और खेला' ने पहली बार कक्ष-कक्षा परंपरा को तोड़ा और यह बच्चों के लिए पूरी तरह मनोरंजक बनी।

मुख्य शब्द: *बाल साहित्य, रंगमंच, कहानी, उपन्यास*

परिचय

मानव जीवन में साहित्य का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि साहित्य मानव जीवन का प्रभावित मुखरित रूप है। वह हमारे अव्यक्त भावों को व्यक्त करते हुए हमें एक संस्कृति और एक जाति के सूत्र में बांधता है। साहित्य और बाल साहित्य के अनुबंध का विचार भी इसी संदर्भ में किया जाना चाहिए। बाल साहित्य में बच्चों की रुचि, उनकी कल्पना, उनकी अनुभूति तथा उनकी मानसिकता आदि केन्द्रित होते हैं। अत: इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल साहित्य का संबंध बालकों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास से होता है। बालकों के बौद्धिक तथा मानसिक विकास प्रक्रिया बाल मनोविज्ञान के माध्यम से समझी जा सकती है। इस विचारधारा के अनुकूल बाल साहित्य का लेखन और प्रकाशन होता रहा है। अध्ययन की दृष्टि से बाल साहित्य, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल जीवनी, बाल गीत, बाल नाटक, बाल रंगमंच आदि विधाओं में लिखा जाता है।

इन सभी विधाओं के अतिरिक्त बाल नाटक विधा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह समझ तथा सम्प्रेषण की दृष्टि से सबसे अधिक प्रभावशाली विधा है।

अन्य सभी विधाओं में नाटक ही एक महत्वपूर्ण विधा रूप है। जिसका रंगमंच एक महत्वपूर्ण अनिवार्य आयाम है। बाल रंगमंच बुनियादी रंगमंच है। बाल नाटकों की सफलता का रहस्य बाल रंगमंच है। बच्चों के संतुलित शारीरिक,

मानसिक और सामाजिक विकास के लिए रंगमंच की परंपरा के इतिहास में पहला चरण बाल साहित्य है तो दूसरा चरण बाल रंगमंच है। वास्तव में बाल रंगमंच बाल साहित्य के अनुप्रयोग का सर्वेक्षण क्षेत्र है। शिक्षा पद्धति की दृष्टि से भी बाल रंगमंच का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल रंगमंच एक तरह से बच्चों का संस्कार रंगशाला है। बाल नाटकों की प्रस्तुतिकरण में दृश्यबंध, प्रकाश योजना, ध्वनि योजना, अभिनय (आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक) आदि विभिन्न पक्षों के साथ ही बाल दर्शक भी महावतापूर्ण है।

बाल साहित्य

बाल साहित्य या किशोर साहित्य में कहानियाँ, किताबें, पत्रिकाएँ और कविताएँ शामिल हैं जो बच्चों के लिए बनाई गई हैं। आधुनिक बच्चों के साहित्य को दो अलग-अलग तरीकों से वर्गीकृत किया गया है: शैली या पाठक की अपेक्षित उम्र, बहुत कम उम्र के बच्चों के लिए चित्र पुस्तकों से लेकर युवा वयस्क कथा साहित्य तक।

बच्चों के साहित्य का पता परियों की कहानियों जैसी पारंपरिक कहानियों से लगाया जा सकता है, जिन्हें केवल अठारहवीं शताब्दी में बच्चों के साहित्य के रूप में पहचाना गया है, और गाने, एक व्यापक मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं, जिन्हें प्रकाशन से पहले वयस्कों ने बच्चों के साथ साझा किया था। मुद्रण के आविष्कार से पहले प्रारंभिक बाल साहित्य के विकास का पता लगाना कठिन है। मुद्रण के व्यापक हो जाने के बाद भी, कई क्लासिक "बच्चों की" कहानियाँ मूल रूप से वयस्कों के लिए बनाई गईं और बाद में युवा दर्शकों के लिए अनुकूलित की गईं। पंद्रहवीं शताब्दी के बाद से अधिकांश साहित्य विशेष रूप से बच्चों के लिए लक्षित किया गया है, अक्सर नैतिक या धार्मिक संदेश के साथ। बच्चों के साहित्य को धार्मिक स्रोतों, जैसे प्यूरिटन परंपराओं, या चार्ल्स डार्विन और जॉन लॉक के प्रभाव के साथ अधिक दार्शनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आकार दिया गया है, उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत को "बाल साहित्य का स्वर्ण युग" के रूप में जाना जाता है क्योंकि कई तब क्लासिक बच्चों की किताबें प्रकाशित हुईं।

बाल रंगमंच

मनुष्य का बचपन रंगमंचीय गतिविधियों से सराबोर होता है। बच्चे बार-बार किसी न किसी का अभिनय करते हुए अपनी कल्पना की दुनिया को साकार करते रहते हैं। परंतु जैसे-जैसे वे औपचारिक शिक्षा की एक-एक पायदान चढ़ते जाते हैं, उनका यह खिलंदडापन छीजने लगता है। उनकी रचनात्मक सक्रियता दबने लगती है। उनका कुछ न कुछ रचते रहने का उत्साह ठंडा पड़ता जाता है। उन्हीं बच्चों में ये सभी अमूल्य बातें बची रहती हैं, जो बचपन में ही रंगमंच से जुड़ जाते हैं।

बाल रंगमंच तीन प्रकार का दिखाई देता है – बच्चों का रंगमंच, बच्चों के लिए रंगमंच और बच्चों के लिए रंगमंच-शिक्षा। बच्चों का रंगमंच प्रायः एक नियमित गतिविधि के रूप में नहीं दिखाई देता। इसमें किसी संस्था या निर्देशक के साथ जब-जब समय मिलता है, बच्चे रंगमंचीय गतिविधि में संलग्न हो जाते हैं। बच्चों की शाला, परीक्षा और दिनचर्या उन्हें पूर्णकालिक रंगमंच के लिए समय प्रदान नहीं करती। सिर्फ बच्चों को लेकर नाटक करनेवाली रंगसंस्थाएँ नगण्य संख्या में दिखाई देती हैं। ग्रीष्मकालीन या दीपावली-शीतकालीन अवकाश बाल रंगमंच का मौसम होता है। इन अवकाशों में अनेक नाट्य संस्थाएँ बच्चों के लिए नाट्य प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित करती हैं, जिसमें अभिनय की बारीकियों के अलावा रंगमंचीय खेल, अभ्यास एवं गीत-संगीत-नृत्य का प्रशिक्षण भी होता है और प्रायः कार्यशाला के समापन पर एकाध-दो नाटक, समूह गान, नृत्य आदि की प्रस्तुतियों के साथ कार्यशाला समाप्त हो जाती है।

उद्देश्य

1. बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल-रंगमंच का योगदान
2. साहित्य और बाल रंगमंच पर अध्ययन करना

बाल रंगमंच का विकास

बच्चों में अनुकरण की क्षमता गजब की होती है। उनके भाव जगत में, उनके निर्दोष मन में हर चीज का असर बहुत यादा होता है। वह रेत पर खींची लकीर की तरह नहीं वरन् पत्थरों में अंकित छवियों की तरह होती है। बच्चों में अनुकरण की क्षमता गजब की होती है। उनके भाव जगत में, उनके निर्दोष मन में हर चीज का असर बहुत यादा होता है। वह रेत पर खींची लकीर की तरह नहीं वरन् पत्थरों में अंकित छवियों की तरह होती है। बाल मन में अश्लील और कुरूप छवियों के प्रभाव भी जल्दी असर डालते हैं। मुझे लगता है कि लोक कथायें, लोक प्रसंग, लोक रुचियों से निर्मित नाटक जिनमें यथार्थ का निष्कलुष अंकन हो तो वे जीवन छवियों को शिद्दत के साथ अभिव्यक्त कर सकते हैं। वैसे भी बच्चों की दुनिया निराली होती है। उनका मन निर्मल, जिज्ञासा अकूत और प्रभाव ग्रहण करने की भरपूर क्षमता होती है। उनकी पकड़ भी तेज होती है। बाल नाटकों की भाषा सरस, सरल और सहज होनी चाहिये। उसमें जटिलता के लिये कोई स्थान नहीं है। बाल नाटकों को खेला जाने वाला रंगमंच आकर्षक चटक रंगों से सजा, आंखों को सुखकर, नृत्य संगीत से युक्त हो।

छोटे-छोटे संवाद हो, जिनमें मानवीय संवेदना का घोल हो, ताकि बच्चे इसे आसानी से हृदयंगम कर सकें, क्योंकि उनके मन पर इन सभी के स्थायी प्रभाव होते है। एक चुनौती बाल नाटकों के निर्देशन की भी है। बड़े बुजुर्ग जब तक बाल मनोविज्ञान, बाल सौन्दर्य बोध और जीवन में उसके प्रभाव और महत्व को नहीं समझते तब तक उस यथार्थ की संरचना को सही आयाम नहीं मिलेंगे। इससे जुड़े बिना यथार्थ के प्रस्तुतिकरण की समझ के बिना उनके रंगमंच को विकसित नहीं किया जा सकता।

रंगमंच भी एक खेल की तरह है। बच्चों के नाटकों का लेखन एवं निर्देशन करने के लिये उनकी संवेदन क्षमता की समझ होनी चाहिये। मैं तारे जमीन पर फिल्म के उन दृश्यों, भंगिमाओं और दृश्यावलियों की याद दिलाना चाहता हूं, जिसमें कला का अध्यापक निर्देशक के रूप में रचनात्मकता के स्तरों का समझदारी से प्रयोग करना एक बड़ी चुनौती है। बच्चों के नाटक लिखने वाले चाहे जितने बड़े हां, समझदार हों, लेकिन तर्क और समस्याओं के हल बच्चों की दुनिया के ही होंगे। जो शब्दों के इस पार से उस पार तक की यात्रा करेगा। कल्पना की दुनिया की असीमत परिभाषाओं के परे जाकर लेखक और निर्देशक के रंगों की समझ, बालमन पर पड़ने वाले प्रभावों की समझ जितनी यादा होगी बाल रंगमंच की सम्भावनायें उतनी ही बढेग़ी, बच्चों का कथानक और उसका समूचा रूप उन्मुक्त होना चाहिये। बच्चा कहीं भी अपने को बंधा हुआ या जकड़ा हुआ अनुभव न करे, यदि ऐसा हो सका तो रंगमंच बालकों के लिये एक खेल से यादा कुछ नहीं होगा और उनका अभिनयजीवन्तमूर्त एवं अभूतपूर्व होगा। रंगमंच जहां नाटक खेला जा रहा है वह बच्चे के लिये कार्यशाला भी है और उनका मुक्तस्थल भी। वह उसके लिये कोई कैदखाना नहीं, बल्कि खेल का हरा-भरा उन्मुक्त मैदान है, जहां बालक अपने मनभावन खेल-खेलने जा रहे हैं।

लोक साहित्य, बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इसमें बाल साहित्य का अतुल भंडार उपलब्ध है। यह एक ओर जहाँ बालकों का मनोरंजन करता है, वहीं बाल साहित्य रचना के सूत्र भी प्रदान करता है। अनेक बाल कविताएँ, कहानियाँ और नाटक लोक साहित्य की पृष्ठभूमि पर निर्मित हुए हैं।

प्रथम बुक्स के पास लोक साहित्य का जो खजाना है उसमें कहानी, कविता, नाटक सभी मौजूद हैं। इन कहानियों में ऊँट के पहली बार राजस्थान आने की कथा पर आधारित केलम को चाहिए ऊँट, दाँत टूटने से संबंधित हिमालय

की लोककथा हिलता डुलता दांत, गौतम बुद्ध के आश्रम की व्यवस्था से संबंधित शॉल का आख़िर क्या हुआ?, फसल बोना सीखने के इतिहास से संबंधित मुंडा लोककथा सोमा क्या बोये? आदि प्रमुख हैं।

बाल साहित्य में लोक काव्यों का भी प्रचूर योगदान है। हाथी भाई कविता हाथी की विशेषताओं को बताने के साथ बाल पाठकों गुदगुदाती है। काका और मुन्नी इसी तरह की काव्यमय कहानी है, जो पंजाब की लोककथा पर आधारित है। इस पुस्तक के काव्य की रोचकता का एक नमूना इस प्रकार है-

लोक नाट्य साहित्य पुस्तकों में, नाट्य रूपांतरण लाडले का ढोल बहुत खूबसूरत रचना है। अनेकों बार इसका मंचन भी हुआ है। असम के लोक नाट्य भाओना पर आधारित भूतों का रंगमंच लोक नाट्य साहित्य पर पंकज सैकिया की एक खास पुस्तक है।

लोक साहित्य मानव का आदि साहित्य है। यह उस युग का साहित्य है, जब मानव प्रकृति की गोद में रहता था। उसके जीवन में प्रकृति की ही प्रधानता थी। एक ओर उसका जीवन था दूसरी ओर पशु-पक्षियों का। पशु-पक्षियों तथा वृक्षों और लताओं से उसका इतना अधिक सानिध्य था कि वह उनको अपने जीवन का अंग समझता था। अपनी तीव्र कल्पना शक्ति से उसने यह मान लिया था कि पशु-पक्षी ही नहीं वृक्ष-लताएँ तक मानव से बात कर सकते हैं। इसी आधार पर लोक साहित्य में पशु-पक्षी, वृक्ष-लताएँ आपस में बातें करते हैं और मानव से भी। इसी का एक उदाहरण है कहानी किस्सा बुली और बाघ का, जिसमें बाघ गाँव वालों को संकट से उबारने के लिए हमेशा मौजूद रहता है। इसके लिए वह गाँव वालों से संवाद भी करता है। लोक साहित्य लोक जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति है। जैसे जिस देश के लोक जीवन के उपादान रहे हैं, वैसा ही उस देश का लोक साहित्य रहा है। लोक जीवन की आशा, आकांक्षा, अभाव और अनुभूतियाँ इस साहित्य में क्रमबद्ध अंकित होती गई हैं।

लोक साहित्य मौलिक परंपरा से प्राप्त साहित्य है। किसी अनादि काल में उसकी रचना हुई। यह रचना आगे भी पीढ़ी की वाणी पर बढ़ी। उसने उसमें परिवर्तन, परिवर्द्धन किया और आगे की पीढ़ी को भावनामय लोक साहित्य का भार सौंप दिया। मौखिक परंपरा में लोक साहित्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होता रहा है। पीढ़ियों और व्यक्तियों के परिवर्तन ने ही लोक साहित्य की भावधारा में परिवर्तन किया और उसे लोकप्रियता प्रदान की।

बाल रंगमंच की विशेषताएँ

बच्चों का थिएटर शुरू में सामान्य थिएटर से और बच्चों के मनोरंजन को ध्यान में रखकर बनाया गया था। यह समझना कि बच्चों के रंगमंच का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य है जो न केवल मनोरंजन करना है बल्कि पात्रों और स्थितियों के मंचन के माध्यम से बच्चे को शिक्षित करना भी है जो उसे उन मूल्यों और गुणों की पहचान करने और उनका पालन करने के लिए प्रेरित करता है जो भविष्य में उच्च स्तर के हो सकते हैं।

बच्चों के रंगमंच की विरासत

रंगमंच किसी भी उम्र के दर्शकों के लिए सीखने का एक अनूठा और गहन अनुभव है। इसलिए, अधिक से अधिक व्यक्ति और समुदाय यह महसूस कर रहे हैं कि बच्चों के विकास के लिए रंगमंच कितना महत्वपूर्ण है। पूरे अमेरिका में युवा-लक्षित थिएटरों की संख्या बढ़ रही है और कई कंपनियों की पेशेवर गुणवत्ता ने संरक्षकों को दिखाया है कि बच्चों के थिएटरों को बहुत सम्मान मिला है। परिवार को शो देखने के लिए ले जाना निश्चित रूप से एक रोमांचक और यादगार अनुभव है, क्योंकि कला से अवगत होना कई अन्य तरीकों से फायदेमंद है। इसलिए, कारणों की एक सूची संकलित की गई है जो बताती है कि बच्चों को लाइव प्रदर्शन में ले जाना इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

इस प्रकार के रंगमंच के प्रतिनिधि

बच्चों के रंगमंच के प्रतिनिधियों में ऐसे कई काम हैं जो अभिव्यक्ति, हावभाव, नकल और विशेष रूप से आवाज़ के समय, स्वर, उच्चारण और मौन के लिए मूल्यवान हैं।

बच्चों के थिएटर के सबसे प्रतिनिधि कार्यों में से एक, जिसे कई संस्करणों में थिएटर में दोबारा बनाया गया है, द विजार्ड ऑफ ओज़ है, जिसमें हवा चलती है, पेड़ टूटते हैं, धूल उड़ती है, और एक घर आकाश में उड़ जाता है। अंदर, एक छोटी लड़की, डोरोथी और उसका कुत्ता टोटो, उत्सुकता से बवंडर के खत्म होने का इंतजार कर रहे हैं। अचानक, एक तेज़ झटका, फिर कहीं से, उन्हें ओज़ की अजीब भूमि पर ले जाया जाता है। डोरोथी के लिए यह साहसिक कार्य लंबा और खतरनाक है।

मस्तिष्क की तलाश में एक बिजूका, सबसे बड़ी बाधाओं को पार करने और ओज़ की भूमि के असली रहस्य को उजागर करने के साहस की तलाश में एक क्रूर टिन वुड्समैन और एक कायर शेर का मंचन इस नाटक को प्रस्तुत करने वाले अभिनेताओं द्वारा उत्साहपूर्ण गति से किया जाता है। कॉमेडिया डेल'आर्टे से ली गई विधियों पर आधारित एक ऊर्जावान और आधुनिक अभिनय शैली के साथ वर्तमान समय।

इस तरह के नाटकों में ओज़ के जादूगरों में से एक, अभिनेताओं की आवाज़, शब्दों को उनके सभी अर्थ, उनकी उद्बोधन की शक्ति, उनकी सहजता दिखाती है, बिना किसी अस्पष्टता के, कि शब्द क्या रंग देता है। बच्चा अपनी आवाज़ की सभी संभावनाओं को जाने बिना उसका उपयोग करता है।

प्रतिभागी बच्चे इसकी मधुर स्मृतियाँ लेकर अपने घरों और विद्यालयों को प्रस्थान कर जाते हैं, अगले अवकाश की प्रतीक्षा में।बाल रंगमंच का दूसरा प्रकार, बच्चों के लिए रंगमंच अपेक्षाकृत नियमित गतिविधि के रूप में देखा जा सकता है। हमारे देश में ऐसी अनेक नाट्य संस्थाएँ हैं, जो अपने वयस्क कलाकारों के साथ बच्चों के लिए बेहतरीन नाटकों की प्रस्तुति करती हैं। ये संस्थाएँ स्कूली दिनों में अलग-अलग विद्यालयों में जाकर बच्चों की सीखने और समझने की क्षमता को बढ़ाने के लिए नाट्य मंचन करती हैं। ऐसे नाटकों में बच्चों को पसंद आने वाली कहानियाँ और चरित्र बहुत कलात्मकता और सहजता के साथ प्रस्तुत किये जाते हैं। इसतरह की संस्थाएँ प्रायः बहुत गंभीरता के साथ, एकतरह के नैतिक-सामाजिक दायित्व के साथ रंगकर्म करती हैं। इसतरह का रंगमंच प्रायः 'इंटरेक्टिव' या 'पार्टिसिपेटरी' होता है, बच्चों की 'लर्निंग प्रोसेस' को रोचक बनाने के लिए काम करता है। ऐसे नाटकों के प्रदर्शन के दौरान बाल दर्शक एक बिलकुल दूसरी दुनिया में पहुँचकर स्वतःस्फूर्त प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं, मंच पर चलने वाले क्रिया-व्यापारों से एकरूप हो जाते हैं। वे इन नाटकों का न केवल भरपूर आनंद उठाते हैं, बल्कि उन नाटकों में उठाये गये सवालों को आत्मसात करते चलते हैं।

बाल रंगमंच का तीसरा प्रकार बच्चों के लिए रंगमंच-शिक्षा है। अनेक विद्यालयों में इसे दो स्तरों पर देखा जा सकता है - पहला स्तर अनौपचारिक होता है, जिसमें ड्रामा क्लब जैसी गतिविधि के माध्यम से बच्चों को मंच प्रदान किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यालय के वार्षिकोत्सव जैसे अवसरों के लिए कोई रंगमंच में रूचि रखने वाला शिक्षक कोई शिक्षाप्रद या पाठ्यक्रम से संबंधित नाटक करवाता है। यह बच्चों की अभिनय-प्रतिभा को प्रकट होने का एक माध्यम मात्र होता है, इसमें प्रशिक्षण जैसी गंभीरता प्रायः नहीं आ पाती। दूसरा स्तर है - रंगमंच शिक्षा का। एनसीईआरटी ने कक्षा पहली से बारहवीं तक के बच्चों के लिए रंगमंच की शिक्षा का बाकायदा पाठ्यक्रम बना दिया है और विद्यालयों को संगीत, नृत्य, चित्रकला, वादन आदि कलाओं के समान इसे भी लागू करने का प्रोत्साहन

दिया है। कुछ इनेगिने विद्यालयों ने ही इसे नियमित पाठ्यक्रम के रूप में लागू किया है परंतु कुछ निजी साधनसम्पन्न विद्यालयों में इसे व्यक्तित्व-विकास के पाठ्यक्रम की तरह भी लागू किया जा रहा है।

बाल रंगमंच के इस वर्तमान परिदृश्य के रूबरू अब हम बात करते हैं इप्टा में बाल रंगमंच की। इप्टा की स्थापना के कुछ वर्षों बाद ही अनेक इकाइयों में 'लिटिल इप्टा' का काम आरम्भ हो गया था। इप्टा के सदस्यों के बच्चे और उनके आसपास के तमाम बच्चों को समेटकर इप्टा के सदस्य ही जब-तब नाटक करवाते थे। इनमें से कई बच्चे आजीवन इप्टा के साथ ही रहे, रह रहे हैं परंतु जो बाद में विभिन्न क्षेत्रों में चले गये, वे भी आज तक अपने लिटिल इप्टा के दिनों को याद कर भावुक हो जाते हैं। इप्टा के बाल नाटक भी कभी भी सिर्फ मनोरंजक नहीं होते थे, उनमें कोई न कोई वैचारिक बीज अवश्य होता था, जो कई बार बच्चों के मन में गहरे तक जड़े जमा लेता था।

निष्कर्ष

विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल-रंगमंच बच्चों के व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास के लिए एक शक्तिशाली माध्यम है। रंगमंच बच्चों का मुक्ति स्थल है, और यह तन और मन के लिए खेल का मैदान है। बाल रंगमंच बच्चों में छिपी शक्ति, ऊर्जा, प्रतिभा और रचनाशीलता को जानने पहचानने और प्रस्फुटित एवं उत्प्रेरित करने का जबर्दस्त साधन है। बच्चों को खेलना सबसे ज्यादा पसंद है और रंगमंच इस खेल-खेल में ही बच्चों के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास का सबसे सशक्त माध्यम है। रंगमंच एक ऐसा माध्यम है जहां सभी वर्गों के बच्चे मिलकर एक साथ सीखने, समझने, जानने के उद्देश्य से मजे-मजे में खेलते हुए उपर्युक्त गुणों को अपने अंदर विकसित करते हैं। अलग-अलग आयु वर्ग के बच्चे अपनी जिंदगी, परिवार, समाज और संसार के विषयों पर रंगमंच से जुड़े माध्यमों अभिनय, कविता, कहानी, गीत-संगीत, क्राफ्ट, पेंटिंग और नाट्य-रचना जिसमें इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि सभी कुछ समाहित समूह में उपयोग करते हैं।

संदर्भ

1. चेम्बर्स, ए. (2011) टेल मी: चिल्ड्रेन, रीडिंग एंड टॉक विद द रीडिंग एनवायरनमेंट। स्ट्राउड: थिम्बल प्रेस।
2. क्रेमिन, टी., मोल्ट्रम, एम., कोलिन्स, एफ., पॉवेल, एस. और सैफर्ड, के. (2009) पाठक के रूप में शिक्षक: पाठकों के समुदाय का निर्माण 2007-08 कार्यकारी सारांश। यूनाइटेड किंगडम साक्षरता
3. दासगुप्ता ए. (1995) टेलिंग टेल्स: चिल्ड्रेन्स लिटरेचर इन इंडिया। लंदन: टेलर और फ्रांसिस.
4. ड्यूर्स्मा, ई., ऑगस्टिन, एम., ज़करमैन, बी. (2008) 'रीडिंग अलाउड टू चिल्ड्रेन: द एविडेंस', आर्काइव्स ऑफ डिजीज इन चाइल्डहुड, वॉल्यूम। 93, नहीं. 7, पृ. 554-7. यहां उपलब्ध है जुलाई2008.
5. गैम्बल, एन. (2013) बच्चों के साहित्य की खोज: आनंद और उद्देश्य के साथ पढ़ना। लंदन: सेज प्रकाशन।
6. फ़िन, जी. (2009) प्राथमिक कक्षा में कविता पढ़ाना। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. एलन, चेरी. "स्मृति: (पुनः)बाल साहित्य के माध्यम से अतीत की कल्पना।" (रे)इमैजिनिंग द वर्ल्ड चिल्ड्रेन्स लिटरेचर्स रिस्पॉन्स टू चेंजिंग टाइम्स, यान वू, केरी मल्लन और रोडरिक मैकगिलिस द्वारा संपादित, स्प्रिंगर, 2013।
8. एवरी, गिलियन। "घर और परिवार: उन्नीसवीं सदी में अंग्रेजी और अमेरिकी आदर्श।" कहानियां और समाज अपने सामाजिक संदर्भ में बाल साहित्य, डेनिस बट्स द्वारा संपादित, पालग्रेव मैकमिलन, 1992।

9. बाजपेयी, आशा. भारत में बाल अधिकार: कानून, नीति और व्यवहार। दूसरा संस्करण। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003।
10. बाजपेयी, नंदिनी. ऋषि और कार्मिक बिल्ली। रूपा पब्लिकेशंस इंडिया प्रा. लिमिटेड, 2015।
11. ब्रैडफोर्ड, क्लेयर, केरी मल्लन, जॉन स्टीफंस और रोबिन। समकालीन बाल साहित्य में नई विश्व व्यवस्थाएँ: यूटोपियन परिवर्तन। पालग्रेव मैकमिलन, 2008.
12. दास, कमला. पन्ना, पफिन बुक्स, 2010।
13. दास, कार्तिका, फ्रॉम समव्हेयर आउट देयर, सीबीटी प्रकाशन, 2016